तारा रानी की कथा और माँ भगवती जागरणँ भगवती जागरण

तारा रानी की कथा और माँ भगवती जागरणँ भगवती जागरण

एक समय की बात है एक नगर में एक बहुत ही प्रतापी और दयालु राजा रहता था, उसके
राजपाठ से वहाँ की प्रजा बहुत ही खुश थीँ की प्रजा बहुत ही खुश थी, राजा मां भगवती में अत्यधीक आस्था रखते थे ंभगवती में
अत्यधीक आस्था रखते थे
और प्रतिदिन माँ भगवती की पूजा आराधना किया करते थे
या करते थे, राजा की अत्यधिक मात्रा में संपत्ति ं
पत्ति
होने केबावजूद, एक बच्चे केलिए केलिए तरस रहे थे। वर्षों तक संतानहीनता केकारण राजा ं
तानहीनता केकारण राजा
कुछ हद तक निराश हो गया। उनकेभक्ति और आस्था से प्रसन्न होकर
और आस्था से प्रसन्न होकर, माँ भगवती (ँभगवती (Maa
Bhagwati), एक दिन उनकेस्वप्न में प्रकट हुईं और उन्हें दो बेटियों केहोने का आशीर्वाद
ाद
दिया।या।
इस दैवीय हस्तक्षेप केकुछ समय बाद, राजा केघर एक बेटी हुई, राजा अत्यधिक खुश थेक खुश थे,
उन्होंने एक भव्य दावत का आयोजन कियाया, पूरा राजमहल भव्य सजावटी सामग्रियों से सजा ियों से सजा
हुआ था, राजा ने अपनी बेटी कुंडली तैयार करने केलिए ज्योतिषियों को दिखाया
खाया, ज्योतिष ने ष
ने
उनकी कुंडली देखकर कहा राजन आपकी बेटी साक्षात देवी का अवतार हैंंडली देखकर कहा राजन आपकी बेटी साक्षात देवी
का अवतार हैं, और वह जहां भी ंभी
जाएंगी उनकी उपस्थिति असीम खुशी लाएगी। राजा ने बड़ी श्रद्धा से उसका नाम तारा रखा।
ी श्रद्धा से उसका नाम तारा रखा।
समय आने पर मंगलवार केदिन राजा केयहाँ एक और बेटी का जन्म हुआ। ज्योतिषियों ने
यों ने
उसकी कुंडली की जांच की तो उनकेचेहरे पर उदासी छा गई। जब राजा ने उनसे उनकेदुःख
ुःख
केबारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि राजन आपकी दूसरी बेटी आपकेजीवन में अत्यधिक
क
दुःख लाएगी। राजा यह सुनकर बहुत निराश हो गया
राश हो गया, उन्होंने ज्योतिषो से इसका कारण पूछाष
ो से इसका कारण पूछा,
इस पर ज्योतिषियों ने बताया कि उनकी दोनों बेटियाँ एक समय राजा इंद्र केदरबार में ं
द्र केदरबार में
अप्सराएँ थीं। बड़ी बहन का नाम तारा और छोटी का नाम रुक्मन था। एक दिन
न, वे दोनों पृथ्वी
पर आये और एक स्थान पर एकादशी का व्रत रखने की सोची। तारा ने अपनी छोटी बहन को
पास ही केबाजार से ताजे फल खरीद कर लाने केलिए कहा और निर्देश दिया की जब वह
या की जब वह
बाजार जाये तो बाजार में कुछ भी न खाये, क्योकि आज एकदशी व्रत रखना है. आज एकदशी व्रत रखना है.

बड़ी बहन केनिर्देश पर रुक्मन फल खरीदने बाजार गईमन फल खरीदने बाजार गई, वह बाजार से फल ले रही थी, वही पास में ही एक जगह पर उसने मछली केपकौड़े बनते हुए देखाे बनते हुए देखा, जिस कारण से उसकेमन में स कारण से उसकेमन में

मछली केपकोड़े को खाने की इच्छा हुई और फिर उसने फल को वही पर रखकर मछली के

र उसने फल को वही पर रखकर मछली के

पकौड़े को खा लियाया, फिर वह बिना फल लिएए वापस अपनी बहन तारा केपास चली गयी। तारा

ने जब उसे बिना फल केदेखा तो उसने पूछा कि उसने कोई फल क्यों नहीं लाया है। जवाब ं

लाया है। जवाब

में, रुक्मण ने मछली केपकौड़े खाने की बात कहीे खाने की बात कही, जिससे तारा क्रोधित हो गई। उसने अपनी त हो गई। उसने अपनी

बहन पर एकादशी केदिन मछली खाकर पाप करने का आरोप लगाया और सजा केरूप में न मछली खाकर पाप करने का आरोप लगाया और सजा केरूप में

उसे छिपकली में बदलने का श्राप दे दिया।

या।

तारा केश्राप केफलस्वरूप रुक्मण छिपकली बनकर वन में निवास करने लगी। उसी जंगल ं

गल

में, प्रसिद्ध संत गुरु गोरख अपने शिष्यों केसाथ रहते थे

ष्यों केसाथ रहते थे, जिनमें से एक शिष्य अत्यधिक क

अहंकारी था। अपने अहंकार केकारणं

कार केकारण, पानी से भरा कमंडल रखकर अपने को ध्यान में लगाकर ंडल रखकर अपने को ध्यान में लगाकर

एकांत में बैठ गयांत में बैठ गया, तभी वह पर एक प्यासी गाय आई, गाय ने शिष्य केबगल में रखे कमंडल ं

डल

में मुँह डाला और पानी पी लिया। जब गाय ने अपना सिर कमंडल से हटायां

डल से हटाया, तो कमंडल निचे

चे

जमीन पर गिर गया

र गया, जिससे ध्यान कर रहे शिष्य का ध्यान भंग हो गया।ंग हो गया।

गाय की इस हरकत को देखकर शिष्य क्रोधित हो गया और पास में रखे चिमटे का इस्तेमाल

मटे का इस्तेमाल

करकर गाय को मारने लगा और उसे नुकसान पंहुचा दिया। इस घटना की जानकारी होने पर

या। इस घटना की जानकारी होने पर

गुरु गोरख ने तुरंत गाय की स्थिति का निरीक्षण किया और अहंकारी शिष्य को आश्रम से

ष्य को आश्रम से

निकाल दिया। पवित्र गाय त्र गाय केप्रति जघन्य कृत्य का प्रायश्चित करने केप्रयास में

त करने केप्रयास में, गुरु गोरख

ने कई दिनों बाद शिष्य द्वारा किए गए पाप को शुद्ध करने केलिए एक यज्ञ का आयोजन

ए एक यज्ञ का आयोजन

किया।या।

जिस घमंडी शिष्य ने गाय को मारने केलिए चिमटे का इस्तेमाल किया था

या था, उसे अंततः गुरु ः

गुरु

गोरख द्वारा किये जा रहे आगामी पवित्र अनुष्ठान केबारे में पता चला। वह एक पक्षी में

त्र अनुष्ठान केबारे में पता चला। वह एक पक्षी में
परिवर्तित होकरत होकर, वह तेजी से समारोह स्थल की ओर बढ़ा, और चालाकी से अपनी चोंच का
उपयोग करकेप्रसाद में एक बेजान सांप डाल दिया। किसी को भी पता नहीं चलां
चला, उसकेइस
विश्वासघाती कृत्य को रुक्मण छिपकली ने देखापकली ने देखा, जिसे तारा ने श्राप दिया था।या था।
रुक्मन ने इस दूषित भोजन केसेवन केगंभीर परिणामों को समझा
णामों को समझा, उसे डर था कि इससे इससे
अनुष्ठान में भाग लेने वाले सभी लोगों की मृत्यु हो जाएगी। उनकी जान बचाने केलिएए,
रुक्मणमण, जो अब छिपकली में बदल गई थी
पकली में बदल गई थी, जानबूझकर एकत्रित भीड़ केसामने प्रसाद केबीच
केसामने प्रसाद केबीच
में गिर गई।
र गई।
रुक्मण केनेक इरादे से अनजान लोगों ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए छिपकली को बुरा बहला पकली को बुरा बहला
कहने लगे और जल्दी से वह दूषित बर्तन खाली करने लगे। इसकेसाथ ही
न खाली करने लगे। इसकेसाथ ही, कार्यक्रम केक्रम के
आयोजकों ने भोजन केभीतर मृत सांप को देखांप को देखा, जिससे उन्हें एहसास हुआ कि छिपकली ने पकली ने
उनकेजीवन की रक्षा केलिए खुद का बलिदान दिया था।अपने निम्न रूप केबावजूद छिपकली
पकली
की परोपकारिता से प्रेरित होकर
त होकर, अनुष्ठान में भाग लेने वाले प्रमुख व्यक्तियों ने प्रार्थना के
ना के
माध्यम से छिपकली की मुक्ति की मांग करने का निर्णय लिया। पुजारी ने तब समझाया कि

इन सामूहिक प्रार्थनाओं केपरिणामस्वरूप
णामस्वरूप, छिपकली ने अपने तीसरे जीवन में एक महान राजापकली ने अपने तीसरे जीवन में एक महान राजा,
राजा केघर में एक बेटी केरूप में पुनर्जन्म लेगी। लगभग उसी समयन्म लेगी। लगभग उसी समय, तारा का 'तारामती' के
रूप में पुनर्जन्म हुआ और उसनेन्म हुआ और उसने राजा हरिश्चंद्र से विवाह किया।
या।

यह कथा सुनाने केबाद ज्योतिषियों ने राजा को रुक्मण की जान बख्श देने की सलाह दी।
मण की जान बख्श देने की सलाह दी।
जवाब में, राजा ने घोषणा कीषणा की, "मैं एक बेटी को नुकसान कैसे पहुँचा सकता हूँ ँ
? ऐसा कृत्य घोर
पाप होगा।" तब ज्योतिषियों ने लड़की को सोने और चांदी से भरे एक संदूक में रखकर नदी ं
दूक में रखकर नदी
में प्रवाहित करने का सुझाव दिया। बहुमूल्य सामग्री केसाथ
ी केसाथ, लोग निस्संदेह पानी से संदूक ं
दूक
निकाल लेंगेकाल लेंगे, जिससे लड़की की जीवन सुनिश्चित हो जाएगी।त हो जाएगी।
राजा ने ज्योतिषियों की सलाह का निष्ठापूर्वक पालन किया। जब एक भंगी (कचरा और ं
गी (कचरा और

स्वच्छता का काम करने वाला व्यक्ति) को काशी केपास नदी कीकिनारे सोने और चांदी से
ांदी से
सजी हुई पेटी मिली
ली, तो उसने उसमें लड़की को पालने का फैसला किया क्योंकि वह और उसकी
वह और उसकी
पत्नी निःसंतान थे। भंगी और उसकी पत्नी ने असीम स्नेह केसाथ उस कन्या का प्यार से ं
गी और उसकी पत्नी ने असीम स्नेह केसाथ उस कन्या का प्यार से
पालन-पोषण किया और उसका नाम रुक्को रखा। जब वह बड़ी हुई तो उन्होंने उसकी शादी
ी हुई तो उन्होंने उसकी शादी
तय कर दी।
रुक्को की सासको की सास, जो रानी तारामती और राजा हरिश्चंद्र केमहल में सफ़ाई का काम करती थी
ाई का काम करती थी,
कुछ समय बाद बीमार पड़ गयी। रुक्को उसकी जगह लेने केलिए आगे आई। तारामती ने
ए आगे आई। तारामती ने
रुक्को को देखा और अपने साझा अतीत केगुणों केकारण उसे पहचान लिया और उसे अपने या और उसे अपने
पास बैठने केलिए आमंत्रित किया। हालाँकि
, रुक्को ने अपने वित्तीय संघर्षों का हवाला देते हुए ंघर्षों का हवाला देते हुए
विनम्रतापूर्वक मना कर दिया।या।
तब तारामती ने उनकेपिछले जन्मों केसंबंध का खुलासा किया और बताया कि रुक्को उसकी
को उसकी
बहन थी, जो मछली खाकर एकादशी का व्रत तोड़ने की सजा केरूप में छिपकली में बदल गई
पकली में बदल गई
थी। अब, एक बार फिर मानव जन्म प्राप्त होने पर
र मानव जन्म प्राप्त होने पर, तारामती ने रुक्को को मां भगवती (
ां भगवती (Maa
Bhagwati) की पूजा करकेपुण्य संचय करने केलिए प्रोत्साहित किया
या, और उसे आश्वासन दिया
या
कि इस भक्ति से उसकी सभी इच्छाएँ पूरी होंगी।ँ पूरी होंगी।
तारामती केशब्दों को सुनकर, रुक्को ने एक बेटे केलिएए मां भगवतीं भगवती (Maa Bhagwati)से प्रार्थना ना
करती है और वादा करती है की अगर उसकी इच्छा पूरी हुई तो वह उसकेसम्मान में मां ं
भगवती की पूजा और जागरण करेगी। मां भगवती (ंभगवती (Maa Bhagwati)ने रुक्को की प्रार्थना सुनी
ना सुनी
और उसे एक पुत्र का आशीर्वाद दिया। हालाँकि
, जैसे-जैसे मातृत्व की ज़िम्मेदारियाँ उस पर हावी
ाँउस पर हावी
होती गईं, रुक्को धीरेको धीरे-धीरे भक्ति और देखभाल केसाथ मां भगवती की पूजा करने केअपने
ां भगवती की पूजा करने केअपने
वादे को भूल गई।
इस दौरान पाँच साल बीत गए और फिर एक दिन
न, बच्चा चेचक से बीमार पड़ गया। बच्चे की गया। बच्चे की
हालत से परेशान होकर रुक्को अपनी पूर्व जन्म की बहन तारामती केपास गई और उसे
जन्म की बहन तारामती केपास गई और उसे

समस्या बताई, इस पर तारामती ने पूछा कि क्या रुक्को तुम्हारे द्वारा मां भगवती (
ांभगवती (Maa
Bhagwati) की पूजा में कोई चूक हुई है। तभी रुक्को को मां भगवती (
ांभगवती (Maa Bhagwati) को की

गयी प्रतिज्ञा याद आयी। पश्चाताप से अभिभूत रुक्को ने मन ही मन खुद से वादा किया कि

जैसे ही उसका बच्चा ठीक हो जाएगा, वह अपने घर में जागरण समारोह का आयोजन करेगी।
चमत्कारिक ढंग से अगले ही दिन उसका बेटा पूरी तरह ठीक हो गया। अत: रुक्को
को ने माता
रानी केमंदिर में जाकर पुजारियों से मंगलवार केदिन उसकेघर पर जागरण कराने का
न उसकेघर पर जागरण कराने का
अनुरोध किया।या।
रुक्को केअनुरोध को सुनकरको केअनुरोध को सुनकर, एक पुजारी ने सुझाव दिया कि वह तुरंत पाँच रुपये का योगदान
ाँच रुपये का योगदान
दे, जिससे हम मंदिर में ही जागरण की व्यवस्था करेंगे। जवाब में
र में ही जागरण की व्यवस्था करेंगे। जवाब में, रुक्को ने कहा की आप लोग को ने कहा की आप लोग
जानते है की "मैं चमारिन हूं
, इसलिए आप लोग मेरे घर आकर पूजा नहीं करने चाहतें
करने चाहते, आप तो
पुजारी है आपको बहली भांति ज्ञात होना चाहिए की मां भगवती (
ांभगवती (Maa Bhagwati) कभी भेदभाव
नहीं करती हैंकरती हैं, इसलिए आपको भी नहीं करना चाहिए।" पुजारियों ने इस प्रस्ताव पर विचार
चार-
विमर्श किया और कहा की कि यदि रानी तारामती रुक्को केजागरण में शामिल होंगील होंगी, तो वे
ख़ुशी से उसकेघर पर समारोह आयोजित करेंगे। इसकेबाद रुक्कोको अपनी बहन रानी तारामती
केपास पहुंची और सारा हाल कह सुनाया। रुक्को की बात सुनकर तारामती ने जागरण में
को की बात सुनकर तारामती ने जागरण में
आने की सहमति दे दी। रुक्को को बताए बिना
ना, सेन नाम केएक नाई ने उनकी बातचीत सुन
ली और बाद में राजा हरिश्चंद्र को मामले की जानकारी दी।
द्र को मामले की जानकारी दी।
राजा को रानी केनिचली जाति केलोगों केघर जागरण में शामिल होने पर आपत्ति थी। राजा
ल होने पर आपत्ति थी। राजा,
रानी को रुक्को केघर जागरण में जाने से मन करते हैंको केघर जागरण में जाने से मन करते हैं, लेकिन रानी उनकी बात नहीं
मानती
मानती
है. उसे जाने से रोकने केलिएए, राजा जानबूझकर अपनी एक उंगली काट लेते हैंगली काट लेते है, जिससे उनकेससे उनके
लिए सोना असंभव हो गया। उसे आशा थी कि उनकेजागते रहने से रानी जागरण में भाग
उनकेजागते रहने से रानी जागरण में भाग
नहीं ले पायेगी। जब जागरण का समय आ गयां ले पायेगी। जब जागरण का समय आ गया, तब रानी ने राजा को जागता हुआ
देखकर
मन ही मन मन ही मन मां भगवती (भगवती (Maa Bhagwati) से प्रार्थना करने लगी कि महाराज सो

महाराज सो
जायें ताकि वह जागरण में भाग ले सके। वह जागरण में भाग ले सके।
रानी की प्रार्थना मां भगवती ने स्वीकार कर लिया इसकेकुछ देर बाद ही राजा वास्तव में
या इसकेकुछ देर बाद ही राजा वास्तव में
निद्रा केआगोश में चला गया। अवसर पाकर रानी तारामती रोशनदान में रस्सी बाँधकर महल ाँधकर महल
से नीचे उतरी और रुक्को केघर की ओर चल दी। जल्दबाजी में रानी ने अनजाने में अपना को केघर की ओर चल दी। जल्दबाजी में रानी ने अनजाने में अपना
रेशमी रुमाल और पैर का एक कंगन रास्ते में गिरा दिया।
या।
कुछ समय बाद, राजा हरिश्चंद्र उठे और रानी को अपने पास से अनुपस्थित पाया। उसकी भलाई
त पाया। उसकी भलाई
केलिए चिंतित होकर
त होकर, वह उसकी तलाश में निकल पड़ा। रानी की खोज केदौरान
ा। रानी की खोज केदौरान, उसकी नज़र र
उसकेरुमाल और कंगन पर पड़ी। राजा यह सामान लेकर जागरण स्थल पर पहुंचां
चा, जहां वह ंवह
चुपचाप बैठकर जागरण सुनने लगा।

जैसे ही मां भगवती (ंभगवती (Maa Bhagwati) केजयकारे केसाथ जागरण का समापन हुआ, सभी
उपस्थित लोगों को प्रसाद वितरित किया गया। रानी ने अपने हिस्से का प्रसाद अपने थैले में
स्से का प्रसाद अपने थैले में
रख लियाया, लेकिन जिज्ञासु दर्शकों ने सवाल किया कि आप इसे क्यों नहीं खा रही हैं
खा रही है, अगर
अपने प्रसाद नहीं खाया तो हम भी प्रसाद नहीं खाएंगें
गे, जिस पर रानी ने कहा आप लोग मुझे स पर रानी ने कहा आप लोग मुझे
गलत न समझे यह प्रसाद राजा केलिए है ए है , और उसने अनुरोध किया कि वे उन्हें और प्रसाद
वे उन्हें और प्रसाद
दें। उन्हें और प्रसाद दिया गया प्रसाद को रानी हाथ में लेकर उसे खा लेती है।या गया प्रसाद को रानी हाथ में लेकर उसे खा लेती है।
रानी को प्रसाद खाते देख जागरण में उपस्थित सभी भक्तों ने भी प्रसाद खाया। इसकेबाद
तों ने भी प्रसाद खाया। इसकेबाद,
रानी महल केलिए प्रस्थान कर गयी। उन्हें रास्ते मेंए प्रस्थान कर गयी। उन्हें रास्ते में, राजा ने रोका और उससे निचली जाति

केघर से प्रसाद लेने केबारे में पूछताछ की। उसने इस बारे में अपनी चिंता व्यक्त की कि

उसने उसकेलिए प्रसाद रखा है और यह कैसे उसे अपवित्र भी कर सकता है। राजा ने घोषणा ष
णा
की कि वह इन परिस्थितियों में उसे महल में वापस नहीं ला सकता।ं
ला सकता।
जैसे ही राजा ने रानी केथैले में झाँकाँका, वह यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि वह थैला
वह थैला
प्रसाद से नहीं बल्कि गुलाब

गुलाब, चंपापा, कच्चे चावल और सुपारी जैसे फूलों से भरा हुआ था। इस
चमत्कारी दृश्य ने राजा को चकित कर दिया।
या।
राजा चुपचाप रानी को महल में वापस ले गया। एक बार वहां रानी तारामती ने मां भगवती
ांभगवती
(Maa Bhagwati) केसामने बिना माचिस की डिबिया केदीपक जलाकर राजा हरिश्चंद्र को ं
द्र को
आश्चर्यचकित कर दियाया, फिर रानी ने कहा की मां की भौतिक झलक पाने केलिएए, उन्हें एक
महत्वपूर्ण बलिदान देना होगा
दान देना होगा, बलिदान स्वरुप वह अपने बेटेदान स्वरुप वह अपने बेटे, रोहिताश्व को बलिदान केरूप में दान केरूप में
अर्पित करें। मां भगवती केदर्शन की आशा से उत्साहित राजा ने अपने बेटे की बलि देने हेतु
देने हेतु
मान गया।
अपने बेटे केबलिदान केबाददान केबाद, मां भगवती शेर पर सवार होकर स्वयं प्रकट हुईं। उनकी उपस्थिति

से बहुत खुश होकर, राजा हरिश्चंद्र ने उनकी शक्ति देखी क्योंकि उन्होंने तुरंत उनकेबेटे को ं
त उनकेबेटे को
पुनर्जीवित कर दिया। इस अद्भुत चमत्कार को देखकर राजा को अत्यधिक प्रसन्नता हुई। फिर
र
उसने अपनी पिछली गलतियों केलिए माफ़ी मांगते हुए माँ की पूरी और सच्चे मन से पूजा
ाँकी पूरी और सच्चे मन से पूजा
की। जवाब में, मां भगवती (ंभगवती (Maa Bhagwati) ने राजा को आशीर्वाद दिया और बाद में गायब हो
या और बाद में गायब हो
गईं।तब राजा ने रानी तारा केप्रति अपनी खुशी व्यक्त की और बताया कि वह उसे अपनी
वह उसे अपनी
पत्नी केरूप में पाकर कितना भाग्यशाली महसूस करता है। उस समयतना भाग्यशाली महसूस करता है। उस समय, राजा हरिश्चंद्रं
द्र, रानी
तारा और रुक्मण सभी ने अपना मानव रूप त्याग दिया और देवलोक (देवताओं केक्षेत्र) में ं
केक्षेत्र) में
चले गए।